नमामि शमीशान निर्वाण रूपं अर्थ सहित PDF (Namami Shamishan Nirvan Roopam Arth Sahit)

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं। विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपं।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं। चिदाकाशमाकाशवासं भजे हं॥1॥

मैं ब्रह्मांड के राजा को नमन करता हूं, जिसका रूप मुक्ति है, वेदों के रूप में प्रकट होता सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापी ब्रह्म है। मैं भगवान शंकर की पूजा करता हूँ, अपनी महिमा में चमकते हुए, भौतिक गुणों से रहित, अविभाज्य, इच्छारहित, चेतना के सर्वव्यापी आकाश और गगन को ही अपने वस्त्र के रूप में धारण करते हैं।

निराकारमोंकारमूलं तुरीयं। गिरा ग्यान गोतीतमीशं गिरीशं।
करालं महाकाल कालं कृपालं। गुणागार संसारपारं नतो हं॥2॥

मैं सर्वोच्च भगवान को नमन करता हूं, "ओम्" का निराकार स्रोत, सभी का स्व, सभी स्थितियों और अवस्थाओं को पार करते हुए, वाणी, समझ और इंद्रियबोध से परे, विस्मयकारी लेकिन दयालु, कैलाश के शासक, मृत्यु के भक्षक, सभी गुणों के अमर धाम हैं।

तुषाराद्रि संकाश गौरं गम्भीरं। मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरं।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा। लसद्भालबालेन्दु कण्ठे भुजंगा॥3॥

मैं भगवान शिव की पूजा करता हूं, जिनका स्वरूप अडिग हिमालय की बर्फ की तरह सफेद है, जो असंख्य कामदेवों की सुंदरता से दीप्तिमान हैं, जिनके सिर पवित्र गंगा नदी से चमकता हैं। अर्धचंद्राकार भौंह को सुशोभित करता है और सर्प उनकी नीलकंठ गर्दन को ढँकते हैं।

चलत्कुण्डलं भ्रू सुनेत्रं विशालं। प्रसन्राननं नीलकण्ठं दयालं।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं। प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि॥4॥

सभी के प्यारे भगवान, कानों से लटकते झिलमिलाते झुमके, सुंदर भौहें और बड़ी आंखें, दया से भरा हर्षित चेहरा और गले पर नीला धब्बा।

प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं। अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशम्।
त्रय: शूल निर्मूलनं शूलपाणिं। भजे हं भवानीपतिं भावगम्यं॥5॥

मैं भवानी के पति भगवान शंकर की पूजा करता हूँ, जो उग्र, श्रेष्ठ, प्रकाशवान परमेश्वर हैं। अविभाज्य, अजन्मा और एक लाख सूर्यों की महिमा के साथ दीप्तिमान; जो त्रिशूल को धारण करता है और त्रिविध दुखों की जड़ को फाड़ देते हैं, और जो प्रेम से ही प्राप्त होता है।

कलातीत कल्याण कल्पांतकारी। सदासज्जनानन्ददाता पुरारी।
चिदानन्द संदोह मोहापहारी। प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी॥6॥

आप जो अंशहीन हैं, सदा धन्य हैं, सृष्टि के प्रत्येक चक्र के अंत में सार्वभौमिक विनाश का कारक हैं, शुद्ध हृदय के लिए शाश्वत आनंद का स्रोत हैं, राक्षसों का संहार करने वाले, त्रिपुरा, चेतना और आनंद के अवतार, वासना के शत्रु, मोह को दूर करनेवाला मुझ पर दया करे।

न यावद् उमानाथ पादारविंदं। भजंतीह लोके परे वा नराणां।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं। प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं॥7॥

हे उमा के महादेव, जब तक आपकी पूजा नहीं की जाती, तब तक इस लोक या अगले में सुख, शांति या दुःख से मुक्ति नहीं है। आप जो सभी प्राणियों के हृदय में निवास करते है और जिसमें सब प्राणियों का अस्तित्व है, मुझ पर दया करो, प्राणनाथ।

न जानामि योगं जपं नैव पूजां। नतो हं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यं।
जराजन्म दु:खौघ तातप्यमानं। प्रभो पाहि आपन्नामीश शंभो॥8॥

मैं योग, प्रार्थना या कर्मकांड नहीं जानता, लेकिन मैं हर जगह और हर पल आपको नमन करता हूं, शंभु! मेरे भगवान, मुझ दुखी और पीड़ित की रक्षा करें, मैं जन्म, वृद्धावस्था और मृत्यु के दुखों के साथ हूं।

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये।
ये पठन्ति नरा भक्तया तेषां शम्भु: प्रसीदति॥

भगवान रुद्र का यह अष्टकम सर्वोच्च भगवान शिव की पूजा हेतु है। जो व्यक्ति भगवान शिव अष्टकम का जाप/पठन यानी पाठ करता है, वह उससे प्रसन्न रहते है।

इति श्री गोस्वामी तुलसिदास कृतम श्रीरुद्राश्ह्टकम संपूर्णम॥